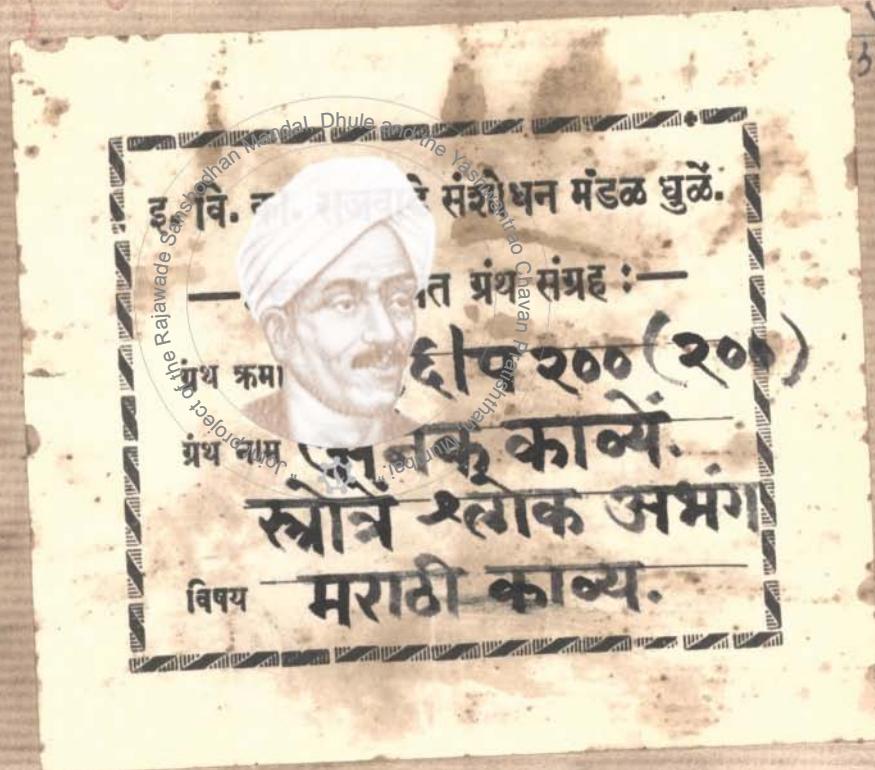


मराठी

३३० क.



मर्त-ठी

कृष्ण चवांसी



ककोटकस्यनामस्तम्भं नव्यस्यचरनुप
॥१॥ र्णस्यराजसंषिं कीर्तनं कलिनद्वानं ॥२॥
॥२॥ अहिष्याद्रौपदि मित्रातारामं देष्टुरितया
॥३॥ पंचकन्यामरेनि त्यमाहापातकं नद्वानं ॥४॥
॥४॥ अतिस्तपगतासिता अतिगर्वपरावरा
॥५॥ अतिदानबलिनद्वानं अतिसर्वभव
॥६॥ वड्यते ॥७॥८॥
॥७॥ भायाचक्रियन
॥८॥ यथारंप्यतथ
॥९॥ वेसलिगोविदा
॥१०॥ हिरधारातेपोष्ट रमज्ज्ञाति तगाति
॥११॥ गोविदद्वप्तेवरमाधवेति ॥११॥ काक
॥१२॥ रम्भञ्जवृष्टपीपादघामालुकारयेत्
॥१३॥ अयोहस्तमयकं अकं ज्ञामाहतेरे
॥१४॥ नाशं रेव दंतथात्तराणं संतारां लयमेव क्रम
॥१५॥ उषाहे हरनिष्टयवकाकस्य वन्नतफलं



The Rajawade Sanskrit Mandal Double and the Yogi Mantra Chavak Pratilipi Manuscript

॥ भर्जे प्रतिहो द्वै नदै न्यं नपल्पार्षनं ॥
॥ आयमसा नीरक्षां ति आय द्वै मरं ॥
॥ भर्जे द्वै ति ॥ ५ ॥ काजिवारणलोहानं ॥
॥ काल्पयाराणवास संना रिपुद वतो याण ॥
॥ अंतरं महदंतर ॥ ६ ॥ अगस्ति कुंभकर्णन् ॥
॥ शनि चूबडवाराण ॥ ७ ॥ गहारुपरि कानि सरा ॥
॥ मिद्रकोदह ॥ ८ ॥
॥ श्वरावृत्ते चक्र ॥
॥ किं ग्रयो जन्म ॥ ९ ॥
॥ माघ भारति ॥
॥ गंधं तेकनिरेको धं न जन्म ॥ १० ॥ हलानं
॥ पलिमवदी कृजं यदो छं दे रां ते विधिव
॥ रात्रगणि कारणिजाता ॥ पूर्वं पीत्सम
॥ धिगं द्युचिता प्रविष्टा यो व्यापि गाप
॥ शहणि कथमध्यतक्ष ॥ ११ ॥



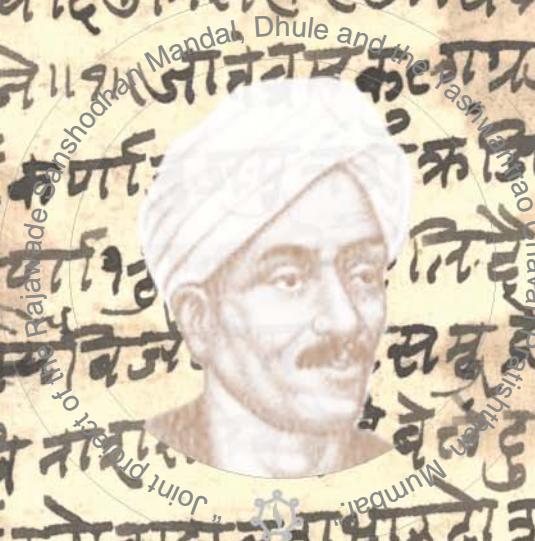
देवरामपदं गुलाप
श्वरामनवैद्य ॥
॥ अस्त्राद्वद्वालं
या कालिदासन

"Joint Project of Sansodhan Mandal, Dhule and the Ashram of Swami Vivekananda, Mumbai"

(3) १०८॥

॥ काक कृष्ण पिको कृष्ण ॥ भ्रेद काक पिकयो ॥
॥ वंसत संसयो न्रासु काक काक पिक पिका ॥ ९ ॥
॥ दानेन पाणी नदू कंक पोनमानेन असि न लुभो जने ॥
॥ नस्थानेन कांति वर्तू चंद नेनै इनेन मूलि नैह म ॥
॥ उपोन्त ॥ १० ॥ ७ ॥ अजो न तव शूल स्य व्रस्तुत्वान् ॥
॥ अनभ्यस्त निराशा लंबाजिं पर्वि इ भोज ॥
॥ नं ॥ ११ ॥ ८ ॥ ७ ॥ नां ॥ ९ ॥ लूनि स्वान पूष ॥
॥ सामास कवित ॥
॥ हे तव कै लट्टा ॥ छाकाट लूमा
॥ मुढाला ॥ १५ ॥ रौते ना कै रिहा
॥ सिद्धतपाक केलाम करि सिडा तिस्वाना ॥
॥ वकं डुरव लालाउ पदेते शैसाक रितामूढ ॥
॥ खा ॥ १६ ॥ अजगर करेन चकरि पंचिनक हे
॥ कामदा समेल काघोक हे सब कावाता राम ॥ १७ ॥
॥ गोग्रास प्राम हे धन वरि छे दसि माहे द ॥
॥ अश्ववे रुविक्रमाहूते रामार्गांग्मो ॥

॥१॥ गहनथारपुठेव्युती^(५) चक्रिनिदावजा
॥२॥ खंउदुआजो॥ इद्यमामवधेष्टपोदयजा
॥३॥ तो॥ अंखलिपकवि माधवानसो॥१॥
॥४॥ खंस्याचेमणस्तरेचिकरितासूक्ताद्विती
॥५॥ किजे क्षमादेउनिस्तरेअधिकताबेरिज
॥६॥ उबोलिजे॥७॥ जानेगरकुण्डप्रजोधनु
॥८॥ तेयकक्षमंकरणः
॥९॥ रास्तरुपार्थि
॥१०॥ चरेरथेस्तोवजे
॥११॥ क्षलित्तिनारा
॥१२॥ चलुमुखोनतोवहावशास्त्रदावंकरास्त
॥१३॥ लोनभनेघनातस्यहुकुलगालिका॥१॥
॥१४॥ लक्ष्मीलक्ष्महिनंचकुलहिनंचसरश्वतिकृपा
॥१५॥ त्रेष्ठेनेनारिगीरिवर्वत्तमाधव॥१॥ दृष्टस्त्रे
॥१६॥ वस्त्रहिनंभलंकारज्ञतहिनचक्षोजनं॥
॥१७॥ स्वरस्मिन्दुगतन्दुं॥ भावहिनंचदैवतं॥१॥



Rajawade Sanshodhan Mandal, Dhule and the Pashchimavati Sanshodhan Mandal, Nasik

॥ अमुत्रस्य ग्रहं क्षत्रियं दृढांश्च न्यन्तं वाधवा ॥ मुरवर्षस्य क
 ॥ कुदयं सुन्य ॥ दिवा भृत्य च वांश्च वा सुवैष्णव्यम् दीप
 ॥ कुण्डलकोद्धर्मजलगीपालीका रेह रिति
 ॥ धारितो लिपाज्ञा ॥ जाहलमा होहरिण
 ॥ जीवाज्ञीसो दुष्टा ये ईन्द्रचन्द्रपाली ॥ ॥
 ॥ येकोवासो पद्मेवावर ॥ येकोभार्यस्कंदरि
 ॥ वाहरिवा येको
 ॥ येकोद्देवो दृढ़ा
 ॥ लसि सीतरामसे
 ॥ हुनरामाज्ञा ॥ २५६ दि: काढा
 ॥ व्यनवद्धिं ज्ञानं त्रिभवात्रकर्त्तयेश्वर
 ॥ अतेकेसारायनमूर्त्यायतेजसा ॥ २५७
 ॥ प्रयत्नेवाक्षेपररा दितातेल हिघडे ॥
 ॥ अर्थार्थ चित्रवामामाजकजलेजाण
 ॥ विघडे ॥ राशाचे हिठाधे विधीतकिरुत्ताश्व
 ॥ गहुजरिपरकमात्रीचुक्तदयधर्वेगाप्त
 ॥ भारत ॥



Jointly made by
 Sardar Mandodhar, Dhule and the
 Shri Swaminarao Chavhan Peeth,
 Mumbai

(६) नूस केर नम्भु दो शाकू रात्रा। लुक्षण
११६ ग्रस ह्य मणि सुधरे त्रिवले हुमि प्रिला
॥ कुठं भज जंगम पिसते स्त्रै ॥ ४ को पित्रे सिर
॥ रिष्यु स्य वनधारये तन लुप्ति न विद्यम
॥ रवि चित्र चरा धरेत् ॥ ५ ॥ ६ ॥
॥ काति विष्णु लक्ष्मी नो नाम वाजाना हु सह
॥ स्ववान त्यस्य रमर कामा। ओण वातं न कंचं च
॥ लृष्ट वहते ॥ ६ ॥ ८
॥ नं ददाय ॥ ९
॥ पित्रा व्याह ॥ १०
॥ नं लतु वास ॥ ११
॥ स्महा रिष्यु रसु तु न रागा लि काये
॥ कृत्वा ॥ नाभ करो ट्या मिना कृतं करें
॥ त्रिवस्य कुशां अमृतं राह वे प्रवक्ति
॥ त्रां नावृस्य कुशां पा ॥ १२ ॥ भवापारेष्वा
॥ वारं यो तरकरे मिति सये वनिष्ठ
॥ नं प्राति कीड़ो सा विवदता ॥ १३ ॥

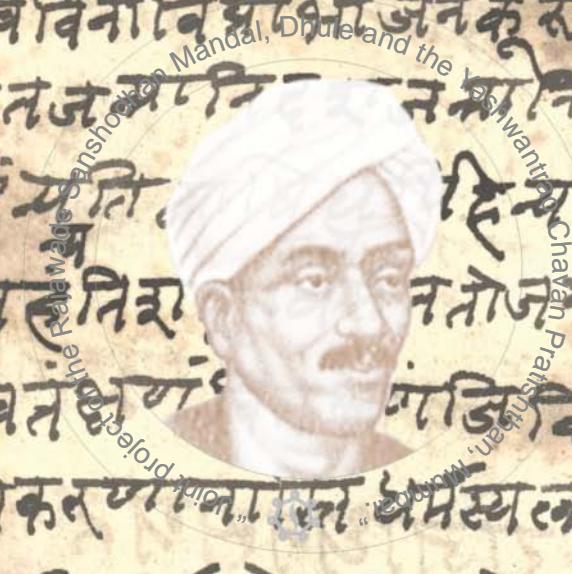
Sanechandan Bhujodi, Dhule and the Yashwantrao Chavhan Pratishthan
Joint Project
Number:

॥४॥

॥ हो पाहु दो तीन टके प्रसारि ॥ ५ वेळे निराह
॥ मुनि वे रवा पि ॥ देवा दिका भोग वडे अविद्या
॥ बक्षि असि के बक ई स्थरिद्या ॥ ६ ॥ ५८५
॥ न किं चित् पुर्वता सारं ॥ न भारं स सलागरं ॥
॥ स्वामिद्रो हो सितं सारं ॥ आरं चित्तास
॥ घातकः ॥ ७ ॥ ते विजापात्रि ॥
॥ ये दूयहोपा ॥ ८ ॥ त्रयः द्वौ नदि
॥ त्रो चंच ॥ ९ ॥ मुकुर ॥ १० ॥
॥ न तृष्ण राजाधन सग्रहण ॥
॥ न सागरे तृष्ण द्विजलेन ॥
॥ न तृष्ण पांडिय सुश्रावित्तेन ॥
॥ न द्रुस्य चक्षु प्रियदर्शनेन ॥ ११ ॥



॥ उदोग कल ह कंडै घूत मखपर लिया ॥८ आहार
 ॥ द्वृद्रुणं ग्रो हं धन्नो ठं पं चल सदां ॥९ ॥
 ॥ अत्रो धवै राष्ट्र डिते द्वय खं शासा दयार्णो
 ॥ त्रिजन त्रिय तवं त्वं त्वं १७ दाता भव द्वारा क
 ॥ हीनं इदा नक्षम चिन्हं दृष्ट छ लक्षणा नि ॥२० ॥
 प्रत्यक्षे यदि
 ॥ वैश्वदेव विना नियाप्तो जनं कृते द्विनि ॥२१
 ॥ धीवं दृष्ट जनान्ति - न ग्रानि दृष्ट करे ॥२२
 ॥ धारि हं ग्रहि ॥
 ॥ दृष्ट न ति वा ॥२३
 ॥ क्षणं चितं द्वाणं
 ॥ हिन्द्राति दृष्ट हं ॥२४
 ॥ दृष्ट न ति वा ॥२५
 ॥ गं डिवित मानवा ॥
 ॥ यमस्य करणा नास्ति वै मस्य लक्षिता गता ॥
 ॥ वहृता परिखर्च इते उनि लातोपरि सेवा
 ॥ धर्म कामास येते ॥१९ त्वे सञ्जना काम
 ॥ क्षाणा इति कर रावि युगी धर्म हेष्वं चना जा
 ॥ एवानि ॥२६ ॥ न विश्वासे लुमिन्द्रमिन्द्रस्यापि
 ॥ न विश्वसेता ॥ कदा क्षिति कूपितो मित्रो सर्व



Religious Sage Relawantra Chavhan Pratisthan Project, Sanskrit Mandal, Dhule and the Vaidika Mandal

गीर्वं त्रका रामेना ॥१०॥ चंडिकाप्रसंभा ॥

॥ अपरिक्षन कर्तव्यं कर्तव्यं सपरि क्षितं
॥ पश्चात् द्वलि संतोषो ब्राह्मण लिङ्कुलं यथा ॥११॥

॥ तैनात् पृष्ठा दिवसे गुणानि ॥ ऊणो नि
॥ त्याचिनि मे कर चिप्प्रोत्यति मग्नाग
॥ द्यावा ॥ शोशां रवलावदावा ॥१२॥

॥ अर्जन कार
॥ पाचवे शेलावाह
॥ वेकुष्ण संचाल
॥ हनोमेस्मरतावाटिविघ्नप्रतिकारा
॥ वाटिविजइल क्षमवैसलपा टिदरिद
॥ द्रिष्टिदसेना ॥४॥ आणु नियागध्वि
॥ न्हाणीयेलासंगंधगंधे परि च चियेल
॥ जाऊनि छोके वित्तिजे थजालहुपदेर
॥ तैसाकरितास्त्राला ॥५॥

Joint Project of the
Santoshnath Mandel, Dhule and the
Yashwantrao Chavhan Peeth
Number : १०८

॥ मै घाचे उदीके नभासिपा हाताबाक कसि
 ॥ जन्म लियुधि चै अभिदान तिस लसता
 ॥ राखे करिए दिलि की तेके दिन देविलि
 ॥ मगातीते काठुनिया रो रिवलि इन्होंने सूल
 ॥ शुक्रे मगसि रेके उमिया बेसलि ॥ ६ ॥ ३
 ॥ प्रकाश के लागगा
 ॥ छिरविने ॥ श्रित्रु
 ॥ विंददा मोदर माध
 ॥ दिन कर उदीचा
 ॥ कर रसभावे पहली लान जाला ॥ स्यजस
 ॥ जेरसने चायं कञ्जा हुर होइ नाहि तरी
 ॥ क्षण मात्रे युंत तसक भपाई ॥ ७ ॥ पति
 ॥ व्रतायां कुच कुंभक मां अत्कग शार्दुलन
 ॥ खस्य कृत लुब्ध स्य विंतरण क्षर राख्यांच
 ॥ खारिविं न मरणांतका वे ॥ ८ ॥



प्रिक्षितेकन
 गीतगातिगो
 ७ ॥ १७ ॥

॥ गुह्यप्रकाशयेत् ॥ ७ ॥ हे मुहूर्ये स गुणेभ्या
 ॥ वचपवेस्मो दानि निचेपरि ॥ पात्रापात्रवि
 ॥ चारतुजनसे सुदाभ इत्याघरि ॥ ८ ॥
 ॥ लाखुसंतस दात्ये अन्वरति यमेदिरा
 ॥ छाडिति क्षेत्रि तुमज्ञयो यनदि स्माजि
 ॥ सेषापदिसाजित ॥ ९ ॥ चक्राभावभने
 ॥ अगस्त्यामुनि
 ॥ बेध्यवेशवत्
 ॥ हिंडानिति ॥ १० ॥ त्रयरागोस्थे ॥
 ॥ ओऽस्त्रिद्विजनि शिळाग्ने केहूरवः पर
 ॥ अहिंहरात्मिया भीते वहूया ईव ॥ ११ ॥
 ॥ वानिकं आद्यनिपथाद्यनिपर्वतमस्तोके रादि
 ॥ विद्याद्यनिवित्तं पंचमै तानि द्यनिद्यनि ॥ १२ ॥
 ॥ रातमो इत्येक्ष्मानां रातया मेण भुवति ॥
 ॥ रात इव सम्भैर्द्य रात क्षोके न पंडिता ॥ १३ ॥



Joint Project of the
 Sanskrit Mandal, Dhule and the
 Ashwamedha Chavhan
 Prashnathan, Number:
 १०८

॥ नभोर काक्रियते कर्मीक पूर्व को हि रुतैरम् ॥
 ॥ अस्त्र वस्त्रय मेव भोलन्यं श्रूतं कमः विद्युत्साह
 ॥ १९८ ॥ कृद्रावि द्याधनं सामीक्रिय गर्ह
 ॥ राज्य सौभव्यते ॥ सद्गुटप्रभिकर्ते संकृ
 ॥ छालको मंखयता ॥ १३ ॥ आशुषनं गोव
 ॥ रे द्राणां विप्राणामात्रवडणां ॥ नथह
 ॥ रामाचरते
 ॥ वाका दृष्टं पा
 ॥ अस्थाद्यान्व
 ॥ अ नाना ॥ १४ ॥
 ॥ अगं कृत्वे हि निष्ठानमृत्वसंतोयं लु
 ॥ रापानसेमुभवं ॥ ५ ॥ यज्ञा यज्ञा वस्त्रा चा
 ॥ रक्षपारमाभित्ताङ्गुकम् ॥ अन्तर्परी
 ॥ होतिवृहिलघट्टे शुधति तु क्या ॥
 ॥ अस्मात्ता द्विस्थियेऽप्यजमहार्द्ये लोधाइ
 ॥ तयाच्च संस्कृत तरव्याहिता चासुक्तुहो



Rajamade Sambodhan Mandal, Dhule and the
 Rashtrapati Bhawan
 Mumbai

॥ देवाधीनं उन्नत सर्वं पंत्राभिनचंद्रैवते

॥ ते पंत्राब्राह्मणाधीने क्राम्भको प्रसदेवता

॥ अभ्याससारी इव घाबुधि करी हूँ ॥१०३॥

॥ स्तारणी ॥

अतिरथा

॥ हात्रुहं श्रीयकात्रुहं श्रीरामेऽदारलाभाभ्यासेनै
वल ॥ विवेच्य वासिस ॥

॥१०४॥ अनीताचोउ

॥ नीताच्येसर्व

॥१०५॥ अहदालभयवाल

॥ पच्यते पीतरस्मृतं

पुत्रेककथयतीवाती

॥ नवयेकष्य-

दीदी ॥१०६॥ अदृश्य

॥ नहीं कार्यसीधारसाच्यवेदाच्यघीर

॥ त्रयानी ॥१०७॥ वैतमीनेन वैललै श्री ल

॥ धोबोल्लगोल्मृदपी ॥१०८॥ कैलुससीह

॥ रद्ज ॥१०९॥ स्मैपेदिदुरेवालना ॥ अकाहर

॥ रवीरलननी ॥ गुलुरलासीबालका ॥ त्रय



Portrait of the poet Gangananda Choudhury, also known as Yashwantrao Chavhan. This is a watermark image.

। नैर्चस्त्रीरत्नानी ॥ सप्तारत्नानीयं उत्तिला ॥ १५
 । यस्य चिते द्रवेषु ते ॥ कृपायासवजं तु द्वु
 । तस्य रथानं च माहाणां ॥ किं जटास्य स्मवक्त
 । ले ॥ १६ । दिवानी रित्यवलक्तव्य ॥ रत्ने नैवेच
 । नैव च ॥ उक्त सं
 । चनोयथा ॥ १७ ॥
 । प्रजात्मुक्तम् मात्रि
 । प ॥ इति गात्रि ॥
 । कुपुण्यम् श्ववितं मनोरथं दुर्जन मानुषं च ॥ स्त्रिय
 । इति पुरुषश्च भाष्यं हेतो न जानानि कुतो मनुषः ॥ १८ ॥
 । प्राणमेव परित्यज्यामानमेवा जिरक्षीति ॥ अ
 । नित्यमधुनं प्राणां मानमाच्च द्रतारकं ॥ १९ ॥



"Joint Project of the Sansadhan Mandal, Bhule and the Yashodhan Mandal,
 "Jyotirao Phule and the Yashodhan Mandal, Mumbai"

॥ प्रातृस्मरामिगण नाथमनाभवेष्ट सिंधुरपूर्ण
 ॥ परिक्रोमित्रं डंडयग्मं उदंडविद्वपरित्वं डंड
 ॥ चंडदंडमारवंडला हि स्तरनाय कवंद वद
 ॥ प्रातृनीमामिगण नाथमनाभवेष्ट ॥ ६ ॥ ६
 ॥ आकष्टुसिमांतंगीज्ञमहर्यैव मृशामात्
 ॥ श्वानकपावपाप्तियं सिंच सिक्तिपूनपूना
 ॥ नानिधे ज्ञानात् निकापीधा ॥ ७ ॥ ७
 ॥ काप्तपारा
 ॥ जपीपारीप
 ॥ रानपुराम
 ॥ चुम्हीउपाकूपो नामघरिली
 ॥ पान्तुपत्तमिष
 ॥ पुरवक चीमुम्हपपारी ॥ ८ ॥ शीम्हणीधरीकुवक
 ॥ प्रणयाद्यमापीपम्हपीव राजा राजुकला ॥ ९ ॥ ९



ज्ञानामपुनर्जीव
 राजनीतिकु
 रिवाजीमाम
 चुम्हीउपाकूपो नामघरिली

—

—

—

—

—

०६॥ होहा॥

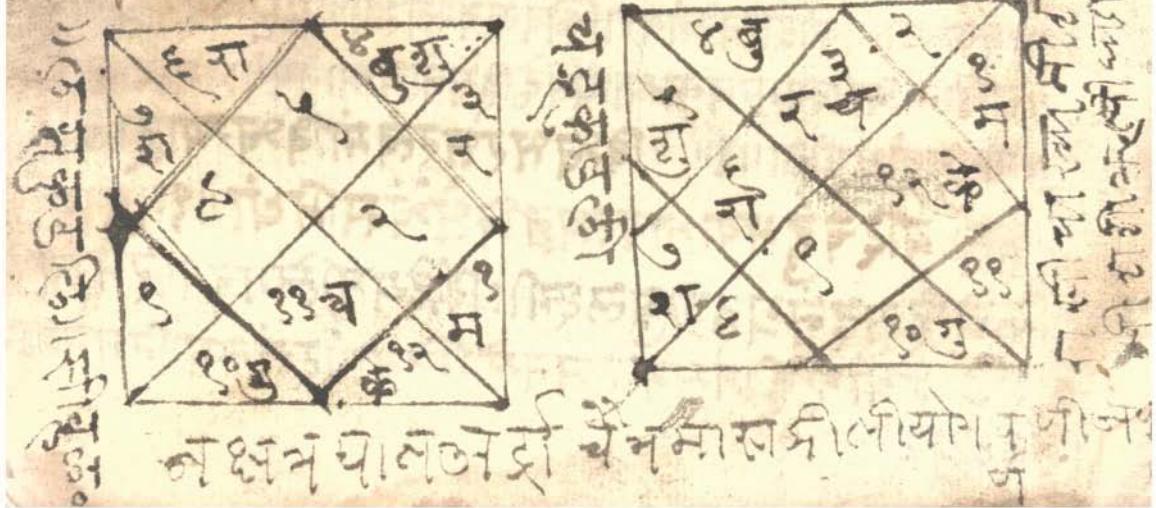
॥ बडेनं हूजे गुनन विनविरद बढाई याय ॥ कनक धन्ते
॥ सोँक हत गहनो गटो न जाय ॥ ३॥ ॥ लडुवालों प्रभुकर
॥ हितें निगुनि गुनल पराय ॥ वहे हुटे प्रभुकर हितें निगुनि
॥ कहे भरमाय ॥ ४॥ ॥ लडमनराखोरामसोय हिजानकी
॥ बाने ॥ काल चाहुधन चलत हैं भरत धरिदिनरात् ॥ ५॥
॥ नरकि ओरनीरकि गतिय दर्शजाय ॥ जवजवनीचे कहय
॥ चलेसबत्यवज्ञाहो ॥ रम्भससवकूप हैं यन
॥ बिनद्व्यनदेनेराम ॥ बक्कोउ भरेलेन ॥ ६॥



"Joint Project of the Rajawade Sansodhan Mandal, Dhule and the Vashimantraw Van Pratishthan, Mumbai"

॥ सहानिस्तन्महल्लिद्रंसाचांधजउमूकता ॥ यन्मूडु
 ॥ तंशणंवापिवासदेवन्मवितयन् ॥ १ ॥ तर्केष्वतिष्ठः
 ॥ श्रक्तयोविभिन्नानेकोत्रष्विर्यस्यमनंप्रभाणं ॥ धर्मस्य
 ॥ तवंनिहितंगुहायांमहाजनोयेनगतःसपंथा ॥ २ ॥
 ॥ यःपुत्रनामारणलब्धकीर्तिःकाकोहरोयेनविनीतहर्षः ॥
 ॥ यद्योदयालंहनमूर्तिरव्ययाननाथोयद्वनांमध्यावरधूणां ॥
 ॥ ३ ॥ ॥ सामच्छेतासागागाजन्मधरणिधरोत्कुल्लंपकेरह
 ॥ रुद्धा ॥ मुमारुविश्व
 ॥ रुद्धा ॥ देवादित्यसु
 ॥ प्रीतावः पात्रुमित्यं
 ॥ सुतावत्सरादिसरगल
 ॥ यन्मा ॥ आमोदीविकर
 ॥ ल्यमामनंति ॥ १ ॥ ॥ आनिलानटवन्मयानवपुरः श्रीकृष्णभ
 ॥ मीकाव्योभाकाशस्वर्वांवराभ्यवस्त्वलीनियधावधी ॥ प्रीतोय
 ॥ घक्षितानिरीक्ष्यभगवन्मत्त्वार्थितंदेहिमेनोन्मानयमानयत्यथुन
 ॥ मामीद्वांभूमीका ॥ २ ॥ ॥ विश्वंभरभरत्वंमांविश्वमाद्वाबहि
 ॥ कुरु ॥ यदेचेदुभयाभावस्यजपिभूष्वंसामिधां ॥ ३ ॥ रत्ना
 ॥ करोहिस्तदनंग्रहणघुलक्ष्मीः किंदेयमत्तिमवतेरमेत्व
 ॥ रथ्या ॥ गधाप्टहीतमनसोमनसोस्तिदैव्यंदत्तंकपानिमपनः न
 ॥ दिदंग्रहण ॥ ४ ॥

॥ आण्यागर्धणिवेत्का ॥ आणूनियागर्धनका
 ॥ नापिवेत्का ॥ सूर्यंधगंधे परिष्यच्यवेत्का ॥ जामु
 ॥ नित्कोद्दीप्रीतजैथजांका ॥ उपदेशतैसाकरिता
 ॥ मृष्टारका ॥ ११ ॥ ॥ क्षीरगेशायनमः
 ॥ जन्मपत्रद्युजीवि ॥ नक्षनधनिशा ॥
 ॥ नशंवलं राजवर
 ॥ योगमी ०५५ पक्षे
 ॥ काकेचेदालयठक
 ॥ राशकुभ ३० ॥ ग्रह
 ॥ गणभालेष्वकार-उत्तरार्द्ध-लीथ ४५५ ३३६ हर





मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००९ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com